डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

(4) प्रश्न :→ 1911 ई० की चीन की क्रांति के कारणो को लिखें।

उत्तर :→ 20वी सदी के महत्वपूर्ण क्रांतियों मे 1911 है। इसके फलस्वरूप चीन मे शताब्दियों से चला आ रहा है। राजतंत्र का अंत हुआ और कलांतर मे वहाँ साम्यवादियो की सरकार कायम हुई। चूकि चीन उस युग का जागृत एशियाई देश है। उस क्रांति का एशिया और विश्व इतिहास पर महत्वपूर्ण परिणाम हुए। ऐतिहासिक परिपेक्ष्य मे निरंकुश अमानवीय सत्ता के विरुद्ध विद्रोह को प्रविष्ट करने की प्रक्रिया रही है। 1911 ई० की चीनी क्रांति उसी प्रक्रिया की अपराहा पूर्ण नितियों के विरुद्ध प्रस्फुरित हुई थी।

जहाँ तक चीनी क्रांति के कारणों का प्रश्न है वे समान्य तथा विश्व की अन्य क्रांतियों की भाँति ही अतीत के गर्भ मे निश्चित थे। इसके निम्नलिखित कारण थे।

(1) चीन क्रांति का पहला कारण विदेशी शोषणों के विरुद्ध व्यापक असंतोष था। चीन के साथ पाश्चात्य देशों का सम्पर्क स्थापित होते ही उसका आर्थिक एवं राजनितिक शोषण शुरु हो गया यह बात चीनी जनता को अत्यंत ही अपमानजनक लगती थी। इस शोषण के लिए अपनी निकम्मी सरकार को मुख्य रूप से उत्तरदायी मानती थी। जनता का यह असंतोष ताइपिंग विद्रोह बॉक्सर विद्रोह आदि के रूप मे समय समय पर प्रकट होते रहते थे। लेकिन उन अवसरो पर मंचू

सरकार उस विद्रोह को दबा देते थे। मगर जन असंतोष अंदर ही व्यापक होते गया। जिसका भयानक विस्फोट 1911 ई० की क्रांति के रूप में उभरा।

(ii) चीन में सुधारों का अभाव भी क्रांति का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण माना जाता है। वहाँ का शासन प्रबंध, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्थाएँ शिक्षा प्रणाली आदि परंपरागत सामंती ढंग से चली आ रही थी। लेकिन पश्चात्य देशों के सम्पर्क में आने से चीनियों पर आधुनिक ज्ञान विज्ञान और तकनिकी का प्रभाव पड़ा। इतना ही नहीं जापान से पराजित होने पर 1895 ई० में चीनी सरकार को भी अपनी कमजोरी महसूस करनी पड़ी। अतः रानी जोशी के काल में चीन में कई सुधार हुए। आर्थिक क्षेत्र में भी कुछ प्रगतिशील कदम उठाए गए लेकिन रानी के मरने के बाद कट्टरवादियों की पुनः चलती शुरू हो गयी तथा सुधार कार्यक्रम पुनः स्थगित कर दिये गए।

(iii) संसदीय प्रणाली की माँग – उसी प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में भी चीनी जनता के द्वारा संसदीय प्रणाली की माँग को सरकार बराबर टालती रही। फलस्वरूप जापान में जहाँ पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान और संसदीय प्रणाली का विकास कर जनता को प्रगति की मार्ग पर बढ़ाया गया। वही चीन में सुधारों को हमेशा कुंठित करके जन असंतोष को भरने का मौका दिया गया। अतः 1911 ई०

के चीनी क्रांति के विस्फोट का एक कारण यह भी था।

(IV) हर क्रांति के पीछे बौद्धिक चिन्तन एवं दर्शन के सहायक प्रक्रिया रही है। चीनी क्रांति के साथ भी यही क्रांति थी। चीन में पाश्चात्य सम्पर्क के साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान के पढ़ाई शुरू हो गई। ईसाई पादरियों ने वहाँ अनेक स्कूल और कॉलेज खोले थे। नये संस्थाओं से चीनी नवयुवक में।

(V) नये ज्ञान विज्ञान का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त बहुत से चीनी नवयुवक जापान तथा दूसरे विदेशी विश्वविद्यालय में जाकर उच्च शिक्षा पाये थे। पत्र पत्रिकाओं माध्यम से उन्होंने राजनैतिक संगठन कायम किए इसका संस्थापक डा० सनजात सेन था। इन राजनीतिक संगठनों के प्रकाशित पुस्तकों पर पत्रिकाओं आदि ने सारे चीन में, बौद्धिक क्रांति का पर्दाफाश कर दिया। अपने वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट तो थे। ही और अ प्रगतिशील ने उन्हें और अधिक उत्साहित कर दिया अतः बौद्धिक चिन्तन भी उसका एक कारण था।

(VI) चीनी क्रांति का एक कारण आर्थिक पतन भी था। चीन में किसी भी प्रकार की आर्थिक प्रगति नहीं हो रही थी। इसके साथ ही वहाँ विदेशियों के आगमन से विभिन्न क्षेत्र में शोषण

भी शुरू हो गया था। चीनी सरकार उद्योग धंधों की ओर कोई ध्यान नहीं देती थी। कृषि कार्य भी बहुत पिछड़ा हुआ था। बाढ़ आदि अन्य प्राकृतिक प्रकोपों के कारण कहीं हर साल फसल की भारी बर्बादी होती थी। इस वर्ग की भीषण समस्याओं से उलझी हुई चीनी जनता को अपने त्राण का कोई मार्ग न दिखाई पड़ा तो उन्होंने आँख मूँदकर क्रांति की ओर दौड़ पड़ी।

(VII) ~~उसके साथ ही वहाँ~~

(VII) उसके साथ ही वहाँ मजदूरों की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। जब संख्या अधिक रहने से सब आजीविका की तलाश में भटक रहे थे। बहुत से चीनी मजदूर विदेशों में जाकर मजदूरी करने लगे। अतः विदेश से सम्पर्क के बढ़ने से नये विचारों से वे अवगत हुए और वहाँ से लौटने के बाद क्रांति के लिए उतारू हो गए। अतः मोटा मोटी तौर पर ऐसा कहा जा सकता है कि मजदूरों की दयनीय स्थिति भी इस क्रांति का एक कारण था।

(VIII) ~~चीनी क्रांति~~

चीनी क्रांति में डा० सनयात सेन की वही भूमिका रही जो तुर्की क्रांति के लिए लेनिन का डा० सेनयात सेन बचपन से ही राष्ट्रवादी व्यक्ति थे। उन्होंने जापान में रहकर प्रवासी चीनियों को संगठित किया बाद में स्वदेश लौटकर तंग मंग हुई नामक एक क्रांतिकारी संस्था की स्थापना की।

1911 ई० की चीनी क्रांति का तात्कालिक कारण रेलवे लाईन को लेकर पेकिंग और प्रांतीय सरकार के बीच का विवाद था। चीन का केन्द्रीय सरकार चीन में रेलवे लाइनों के निर्माण का कार्य विदेशी कम्पनियों को दे रही थी लेकिन प्रान्तीय सरकार उसके पक्षपाती नहीं थे। उनका कहना था कि यह काम प्रांतीय सरकार को सौंपा जाय। इसी विवाद को लेकर प्रांतीय जनता का असंतोष इतना बढ़ गया कि केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध चीन के प्रांतों में विद्रोह शुरु हो गया और धीरे-धीरे यह विद्रोह प्रगति करता गया और अंत में मंचू शासन का अंत ही कर डाला।

इसप्रकार निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि 1911 ई० की चीनी क्रांति का कारण अतीत के गर्भ में हो चुका था। जनता को क्रांति का एक बहाना चाहिए था। जो रेल लाईन के निर्माण संबंधी विवाद से उत्पन्न कर दिया। फलस्वरूप 1911 ई० की चीनी क्रांति हुई जिससे चीनी क्रांति का विशिष्टतम महत्व है। इस क्रांति ने न सिर्फ मंचु राजवंश का अतीत का विषय बना दिया वरन राजनितिक क्षेत्र में एक नवीन परम्परा की शुरुआत की उस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक चीन के इतिहास में 1911 ई० की चीनी क्रांति एक युगांत कारी घटना है।